2夕;

স॰খ্যাসার।

स्मर्था १.

है दानी थ रामना विमानसङ हाजगरनर

可难管

পঞ্জুত, হড়্রিপু প্রদৃতি আবস্তানীয় সংখ্যার পর্যায়

নংশ্বাং সু হিডার্থায় ৪চিডং প্রশ্তকং দয়। তম্য লোবান্ পরিভালা অগ্ন, গুক্ক প্রতিভাগ

> बीविशिनस्थितः सन कार्यः स्रवीकः

> > कनिकाउ। ।

বুত বাবু গোবিক্চক গুপ্তের ছারা সংবাদ সক্ষনরঞ্জন

যন্ত্রে মুক্তিত হইল।

সকাৰাঃ ১৭৮৩।

মূল্য ।•ু চারি আনা মাধ্য।

বিজ্ঞাপন।

ক্ষেত্রারা পাঠ করিতে যাইলে জনেকগুলিন সংখ্যার প্রতিষ্ট জানা অত্যাবশ্যক, অথচ একালপর্যান্ত কোন মহান া কর্ক এমত একখানি পুস্তক মুক্তিত হয় নাই, যন্ত্রা-র ভদাবহ জ্ঞাত হওয়। যাইতে পারে। জানি **এই অসম্ভাব** দুটাকবল প্রভাগোয় প্রোংসাহিত হইয়া **এই কুড পুস্তক** ্র সম্বলন করিল। যা এতং পাঠে এই প্রাচীন ভারত-রাধ্র পুর্মাকাল-প্রচলিত আচার, বাবছার, ধর্মা, কর্ম প্রভৃ-^L 5< কথঞ্জিত প্ৰিচয়ও পাওয়া যাইতে **পা**রে। **ইহাঁ যে স্থ**কুp ব্যক্তি বালকগণের পক্ষে কতদূর উপযোগী হইবে, তিছিল য অপবিত্যু রহিলাস, তবে মধ্যেই ছুই একটি কটিনতর সংখ্যা পরিতাক্তমতে, ভাহারদিগকে এই পুস্তক খনি পাঠ করান যাইতে পারে। যাহাইউক এমত সাহস ^{ুর} যাইতে পারে, যে ইংরাজী বিদ্যালয়ের উচ্চ শ্রেণীস্থ প্রভাষান্তরাগী ছাক মাত্রেই ইহার উ**পযোগিতা উত্তমরূপে** ময়ত্তৰ কৰিতে পারি বন। **তল্মধ্যে যে সকল পর্য্যা**য় **লিখিত** ^{হইল ওত্তাবৎ প্রায় প্রভ্যেক বাঙ্গালা পুস্তক পাঠ প**ল্লে অভি**} मात शासकतीय।

ইহা কি সামান্ত জুংখের ও বিশ্বরের বিষয় যে ইংরাকী বিদ্যালয়ের কৃতবিদ্য ছাত্রগণের মধ্যে অনেকেই পঞ্চভূত কাহাকে বলে তাহা অবগত নহেন। তাঁহারা পঞ্চতকে পাঁচটি প্রেত বলিয়া জানেন।

অভএব পঞ্চতুত, ষড়রিপু এবং সপ্ত চিরজী বী প্রস্কৃতি: আবক্তবীয় পর্যায় ইহার মধ্যে সনিবেশিত দরা হইল অপর ছুরুহ ও অনাবশুক বোধে অনেকগুলিন সংখা পর্বি ডাক্ত হইপ্লাই। পুসক্ষানি সহজ কর্বাপয়ে, প্রতি কটিন শক্তেরই অর্থ লিখিত এবং প্রায় প্রভোক সংখ্যার নিমুদ্যা গে এক একটু টাকা এবং কৃচিং এক একটু মন্তব্য বিষয়ং লিখিত হইল।

সংখ্যাবোধক ও সংখ্যার পূর্ণবোধক এই দ্বিবিধ সংখ্যাবাদক সাধুভাষা শক্ষ এবং কডকগুলিন সাক্ষেতিক শক্ষ সকলেরই জানা আবিশ্যক বলিয়া পুস্তকের শেষভাগে ভতাবৎ সনিবেশিত হউল। একণে ইহা সর্বতি পরিগৃহীয় ও বাবস্তে হইলে মুমস্ত পরিশ্রম সফল বে।ধু করিব।

পরিশেষে সকৃতজ্ঞচিত্তে বিজ্ঞাত করিতেছি যে সংস্কৃত্ত কালেজের শা তি শাস্ত্রাধ্যাপক শ্রীযুক্ত ভরতচন্দ্র শিরোমণি এবং উক্ত কালেজের সহকারী সম্পাদক শ্রীযুক্ত সোমনাথ মুখোপাধ্যায় অপিচ কলুটোলা ক্ষুলের হেড পণ্ডিত প্রীযুক্ত ন্যকান্ত ভর্কপঞ্জানন, এই কয়েক মহাত্মা এই পুস্তৃকথানি সঞ্চলন পক্ষে বিশেষ সাহায্য করিয়াছেন। এমন কি ভাঁহার দিগের অন্তুক্লা ভিন্ন আমি কথনই মদারদ্ধ কার্যো সিদ্ধ কাম হইতে পারিতাম না।

्रहरू है सारकार জীবিপিনমোহন সেন গুপ্ত। প্রেসিডেদী ফালেক।

সংখ্যাসার i

यश्च वश् ।

यशन यथीं वर्गतार्का

2

সূর্যা পূর্বাদিকে উদয় হইয়া দক্ষিণ দিয়া যে ছয়দাস অন্তগত হন ভাহাকে দক্ষিণ বন এবং উত্তরদিক দিয়া যে ছয়দাস অন্তগত হন ভাহাকে উত্তরদিক কহে।

शक बरा।

कृष्णभूक

পूर्नियां भाव अभावका स्वति ममग्रटक क्रिक भक्त, अवर अभावका हुरेटक श्रुनियां भिर्यास मंत्र-

	明事明新	কহেছ।	অভএব	अ न्त	निम	রাকে
LA P	ক্ষ হয়।					

্থৰ প্ৰয়। পিতৃ খাণ ক্ষমি খাণ দেব খাণ

লোকে বেদ পুরাণানি গঠিছার। ঋণি ঋণ সম্ভাবনাংপাদনে পিতৃ ঋণ, এলং সজ্জানি সম্পা দনে দেব ঋণ হইতে মুক্ত হইয়া গাকেন।

जिलाक।

ভূরে ক	** *	***	••	
'करहर्ल'क	• •	٠		
स्:लं व		, .,	***	*}
				-
				٤
at Ti				জা হ
इ .लॅंक	,	ম ৰ্ভা	লাক (দু	वस ,

ভূব লোক	1448	••••	বিতীয়	লোক
শ্ৰেণক	****		লাক, অঃ	ার পুর
•	1	ত্ৰজগৎ।		
इ र्	.,,		4 14	5
य १ य १ ३	• •		W 61	7
্তিল		. 41	,	`>
., - (
				ie.
	f	नक बरा।	,	
ুং লিফ	•	****	***	>
দ্ৰীলিক	4	***		*
<u> শ্বিলিফ</u>	••	7 t mt	•	*
				usunga kathapita s Mitjalik s
		•		15
	-	তিগুণ ৷		
म न		•••	•	٠٠٠ څ
ব জ্বঃ			***	··· 5
ভ মঃ	,	*1 **		,,,,, %,
				9

N. M.				. खर्श
्रेगः । अ	ফডির প্রথম	প্তৰ যুদ	দার: স্বি	हे ह्यू ।
•	ি ছিভীয়	लुन के	एकि । क	र्ग ।
`ভনঃ এ	ই ভীয়	ચાન છે	স্থি না	গ হয়:
*	ত্রি তাগ	ī į		
জাধি দৈবিক		***	••	
আধি ভৌতিক	••		****	
जा धाशिक	•	4.00	•••	•
				৬
* 4				অধ্
व्यादि देनियक	বজাগত,	डेल्का	শত প্রভূ	তি দে
	७ १भ हेन्द	ধীন হ	টয়া থাবে	FI
অ।ধিভৌতিব	যে তুংখ ম	सुध्यु, ६	শশু, পক্	इड्-
•	ভে হইয়া	থাকে।		
অাধ্যাগ্মিক	गड़ीत वि	যো মে	নতে কা	গণ্ড
•	প্রভূতির	देवसभा	জ্না স	া কাম
	ক্রোধাদি			

मध्य हत

I

ভাবত্রয় ৷

	' · ·			1.15
পশু	****		****	
वीर	****	***	,	
E # 27	****	***	••••	S
	-			-
				19

বেনোক্ত বিধানে শক্তাদি পূজা যদার।

হি তাহাকে পশু ভাগ কছে। নহা আড়মা

কোরে ভদ্রোক্ত বিধানে ঐ পূজা যদ্মারাহয় তাকে বীর ভাব বলা যায়। এবং নদ্য মাংগ

কেপে ছারা বিনাড্যরে ঐ পূজা যদ্মারা হর তা
কি বিয়া ভাষ কহা যায়।

	অপর	ভাবত্র ৷			
শ ্বিক	.***	1144	****		` \$
াজ্যিক	****		4***	****	>
ভাষ্দিক	. * **		••••	***	>
	•				-

কেবল ধর্মার্থ জ্ঞানৈখর্য্য প্রকাশকে গান্ধিক। ভাব কহা যায়। কান, কোধ, লোভ, লগত্যোব

म इंडिटक	রাজ	স ভাব	বলা যায়	। डिग्री	TOWN.
निजानगा,					
रजा भाष					

নিজালস্য	, कर्म्म दे	वखना निष	য়েডাকে	ভাষ্	ड ांट
বলা শায়					
* ,		ত্রিকাল	1	•	
<u>\$.2</u>	***	***	***	401-	•
ভবিষ্যৎ	411	* 1			
বর্ত্ত ধান	٠	1324	****		•
r 1				•	
শ্ব				ঙ	L
कुंख	****	* H +	.4**	অর্ভ	†ত
ভবিষাৎ	-		****	অনাগ	13
दर्खगान	****	• •	٨	উপৰি	\$ E
रैवर	করণের।	५ हे उ.	লত্রধকে	অনেক	21-
कांद्रव दिख	ভ করিয়	াছেন। ফ	লতঃ এম্	লে অ	্ৰা
্বিগের ভা	হ্ বক্তব্য	নহে ৷			
Segar H. I. a. Sa	অপ	র কাল	ब्य ।		
नोना	47.54	****			_s , >
दशो वन	****	,	,	***	>
टार्कका.	,***			***	5

-८क्ष्ये ट्योहांवदाटक कांस विदेशाय शतिश= ণিত কবিয়া থাকেন। মমুব্য জীবন এই রূপে হিন্দু পণ্ডিভদিপের -খাগৈতিন ভাগে বিভক্ত হইয়াছে। দশাত্র! 5 214 গভীর নিজাবস্থাকে সৃষ্প্তিকহে। ত্রিদে । 4.15 43 1.75 ... বারু। ··· শরীরের তিক্ত ধাতু।

(東京)

3.3

্রতি দোষভায় না ধাকিলে শরীরে স্কুত গীমনা-ু গমন এবং শ্রীর রক্ষা করা ভার হইত। বায়ু, জাঞ্লৰং জল দ্বিটি যন্ত্ৰ বিশেষ চালিত হইয়া शंदर्क ।

পদাথ এয়া

ক্রেডন অচেতন डेसिन

103

অ ৰ্থ

চৈতন চেতনা বিশিষ্ট পদাৰ্থ যথ। আশাদি। 🚒 চেতন চেতনা বহিত পদার্থ বলা পুস্তকাদি।

याहा इति (डर्ल ज्या यथा नडानि।

শক্তিত্রয় ৷

কর্মত্রয় ৷

নিডা		****	****	,
়নমি ক্তিক	.***	***	***	*
ক্ষা	****	***	****	*
				৩

যাঁহা না করিলে পাপ হয় তাহাকে নিত্য কর্ম বলে। কোন কারণ বশতঃ যে কর্ম করিতে গয় ভাহাকে নৈমিজিকু এবং কামনা করিয়া যে ার্য্য করা হয় সেই কাম্য।

প্রমাণ চতুফয়।

. 1777		- \		_
্ৰত্যক্ষ	****	gwwn	****	<u>्र</u> ्रे
<u> শরু</u> মানিক			****	*
উপনানিক		****	••••	>
া কিক	****	** *	****	>

. 8

যাহা ইন্দ্রিয় থারা অন্তত্তত হয় তাহাকে প্রত্যক্ষ প্রমাণ কহে। ফল দর্শন করিয়া যাহার হেতু দির্দেশ করা যায়,ভাহাকে আনুমানিক কহে,

(ক্লা পূম দুকে অমি নিরপণ করা) পরস্পর श्रीयांकृष्ट थाकांत्र अरकत प्रमति अनाटक निर्द्धन इंद्रीत उनमानिक वना यात्र। आश्वाका अर्थाः ইদবরাণী প্রভৃতি বিশ্বস্ত নাক্যকে শান্দিক প্রমাণ

অংক

হিন্দু শাস্ত্রমতে বেদ অপৌরুষেয় অর্থাৎ কোন পুরুষ কর্ত্ব নহে। অনাদি ত্রন্ধা, অগ্নি, বায়ু শ্রুবি ছইতে গরুর পালানের ছম্পের ন্যায় প্রকাশ মাত্র করেন। এবং মহর্ষি ব্যাস উহা শাখা প্রতেতে ্ৰিভাগ ক্রিয়াছেন বলিয়া তাঁহার নাম বেদব্যাস নানে থ্যাত হ্ইয়াছে।

চতুরাশুম।

ানপ্রত্		2 . 2 .	****	A***	*
(重要	4.75	****		****	· , * *
				•	8

বানপ্রস্থান্ত্রনার বনে বাদ করেন। বছ চলাব্রি ভারতবর্গায়েরা উপরি উক্ত আশ্রম ্নুক্তর বিভক্ত হইয়া এই ভারতভূনে বাদ করি-লেখাদিতেছেন। তথ্যগে গৃহস্থান্ত্রনার করিবাই ক্রেণ অধিক ও বানপ্রস্থান্ত্রনার অভি

চতুৰ্বৰ্গ ৷

এই বর্গ চভুষ্টাংরে মধ্যে কোন না কোন।

গই প্রায় নতুষ্য নাতেই পাইতে ইচ্ছা করিকা

িকন।

,	চ	তুৰ্বণ ৷	
্বান্দণ	***	***	****
ক তিয় বৈশ্ব		,	**
रेन श्र	•,•	****	.***
শূদ্র	***	•••	

অভাদেশে পূকাকালে ব্রাহ্মণের। ইনি ক্রিয়া দম্পাদনে, বেদাদি ধর্মশাস্ত্র পাঠে এ বাবহাদি দিভে। ক্ষত্রিয়েরা রাজ্যভার প্রহণে রাজ্য রক্ষার্থ। বৈজ্যেরা ব্যবসায় করিছে এ শুদ্রেরা দাসহকার্যা নির্বাহ করিছে আলিপ্ত কিতেন ও দেশাচারদ্বারা থাকিতে বাধ্য হইতেন পরিমাণ চত্তীয়া

		•		
SILCHM			***	
ভাল			•••"	****
গোকণ	**** (,	****	
বিভস্তি				****

1

िक्षार्मम 💎 कब्बनी महिल विख् ज अञ्चर्छ।

হ'ল	-হধ্যমার	া সহিত বিং	দুভ অঙ্	कें।	
্ৰংকৰ্	অনামি	क्रांत	के थे।		
সম্ভ	क निर्दे	্ব বি বিশ	ত অধ্য	ংভাদ	ล์ :
•	<i>য়</i>	ग ठङ्गोस	1		
7, 3 }		***	4879	•••	۲,
.ฮร์โ	****				3
ৰ প্ৰ	*/*1	***	****	4.	3
र्त्ह	***	****	***	****	>
				٠	-
					. 8
	চ কু	विध माग	¥ ·		
(मो ड़		» • •		.,.,	\$
াশ্র		••••	• ••	••••	>
र^त्स		. • •		****	3
, , - r					
্স্ত্রিক		***	•••		*
		*11	•••		5 8

সূৰ্য্য এক রাশিতে যাবৎ কাল থাকেন তা-ভাকে গৌরমান বলা যায়। চাক্রনান সূথ প্রকার মুগা চাক্র ও গৌৰ চাক্র। শুক্ল প্রতিপদাদি অমাবদ্য। পর্যান্ত মুগ্র চাক্রা ক্লফ প্রতিপ্রাদি পৌর্নমাদী পর্যান্ত গোল চাক্রাইম। সাধারণতঃ তিশদিনে যে মান হয় ভাছাকে নাবন মান কহে। অসিনীনক্ষত্র অর্থা রেবভানক্ষত্র পর্যান্ত যে কাল তাহাকে নাক্ষ্যিক আল কছে।

শিক্ষভূত। কিভি কপ ভেজঃ মরুৎ বৈশ্বাম

ক্ষিতি-মৃত্তিকা। অপ-জল। তেজঃ-অফি মূরুৎ-বায়্। ব্যোম্-আকশি।

ভারতবর্ষীয় প্রাচীন পণ্ডিডদিগের মতে এই পঞ্চতুত করণক মন্ত্রা দেছ নির্নিত হইয়াছে।

ইউরোপীয় 'অধুনাতন পণ্ডিতেরা বিষ্টি প্রকার জল আছে ইছা নির্দ্ধেশ করিয়াছের।

Č

ক্তে	र्घानिषु स्व	বাহ্যেন্দ্র	য় পঞ্চ।	
110	2401	,,,,,	,	3
ક ચ	* ***	****	•	5
अन् र्	***	****	• •	3
V Ą	4**1	***	4.6	5
हे पश्च		AF 1	****	*
			ga cer	anggar Ardersy
				g.
প া	यू-छहारमा।	এবং উপস্থ	-निक्र।	
		मुग्न शका		
O要t.	***	\$00 PK		3
ठर्ष .	()		****	*5
ন'নিকা	8 5P		4007	*
জিহ্বা	nees	u # 1 +	****	3,
30	# # # # # # # # # # # # # # # # # # #			٠,
				brase with the

ইহাদের কার্য্য। ত্রপ. শব্দ, আব, রম এবং স্পর্শ।

অङ्ग्रिल शक्ष।

बहुके फर्करी	****	***	g to sp. 20	
জ্জনী	. • • •	. ***		•
त्रभागा	***	~***	v	
অনামিকা	****	,	9.44	`
कनिष्टा	AT 27	***1	****	:

অঙ্গ-রদাঙ্গল। তর্জনী-তংগরাস্থি এবং এইৰণ ইত্যাদি।

Û

शक्शना।

			•	
গোময়	***		***	
গোদূত্র	****		•••	
मि	*843	A 4	****	
তু জ		** *	****	
মূত	••••	****	****	
			-	

লক্ষীনারায়ণ্ প্রভৃতি দেবভাদিগের সং

Œ

कता ७ व्यवाना भूका उभलटक भक्षातात वाद-रात रहेन्ना थाटक।

	প্র	াম্ভ ৷		
छ् भ	TRUS		****	3
६ वि	****	~ # # #		>
म एक	a • ##	****	****	3
মধু	***	****	•••.	5 ,
চিনি	****		****	>

অক্ষেশীর বালাখ্রীদিশের বিভীয় বিৰাহ্ কালুদিতে পঞ্চায়ত পানের প্রথা আছে।

পঞ্চবটী। প্ৰস্থা বিল্ ৰট ধাত্ৰী অংশাক

थाळी व्यर्थाय व्यागनकी द्वार ।

্ঞেবটা তলে মৃত্যু হইলে হিন্দুধর্ম মতে
মন্ত্র্যাবিশেষ পুণ্যাক্ষা বলিয়া প্রতিপন্ন হরেন :

পুঞ্চলবণ!

****	. 144	, 4 5 4
****	***	***
****	16	• *,
4120	**	****
,•	***	***
		••••

পঞ্চর ৷

স্থলচর	3.0 ×	, .,	
क् ल हर	41.4	** **	***
উভচন	**	4.9	4***
मिवां ह्य	••	****	
নিশ্চর	, e a	****	,

এই পৃথিবীয় সমস্ত জীব ই পাঁচ প্রকার প্রশাহিত বিভক্ত হইমাছে। প্রশাহিত বিশ্ব

। এত দেশীয়দের জীবিকা নিকাছার্থ ধান্য।

তে আবশ্যক বে ইহা বুত্রলিয়া উক্ত হুখ্যাছে।

शक्तमा ।

ı, koması		141)
क्षांना	.***	****	~ P d	, s
जुमा।		****		5
ভিল	****	••	****	٠,
ন্ব	# ** *	***	****	>

শ্বেত গৰ্ষণ

মুকা অংশিং মুগ এবং মর্বপ্-সরিষা।
এই পাঁচ প্রকার ভিন্ন অন্য প্রকার দ্র নাই এমত নছে। এডাবতা এই কয় প্রকাশ শিলামধ্যে থেঠ। শারদীয় মহাপুজার মৃতি নির্মিত সেদীতে গ্রেশ্যা বপন করিয়া থাকে

পঞ্চোপচার পূজা।

भूष्य भूष भौष देनदवमर

ে বেবতাদিবোর পূজা দামান্যতঃ পঞ্চোপ-চারেই হুইয়া থাকে।

পঞ্চ উপাসক।

গাণপ্রা

शंका

r		. সংখ্যাসার।		\$.	>
r.3		***	***	79 83	*
्र _{ास} ्य -		,***	4.851		5
*AIT		49.64			>
artiga		,			5
					······································
3 [7].			फ रर्थ		
ণ,ণপ্তী			গণেশের	উপাদ	3 (
เขาส		+ 1+	ऋ र्याड		نان
रेद:५३ द	. •	•••	विकुत		ঐ
Çe(₹ ₁		***1	শিবের		Ď
3		***	শাক্তর		ঐ
	·	পঞ্চবাণ	1		,
অর বি ন্দ		***			*)
্ৰাশক		,	9.,	,	>
চুত (আ	ম্)	****	, • • •	****	>
নবম[ল	~•	****	***	,	>
নীলোৎ		***	1##t	****	>

.

বৃদ্ভ	কা লে উলে	থিত পূদ্য ক	য়েকটি ২
٠, ,	বৎ হইয়া ন	•	
্ফুরে।			
* *	অপর প	किवान!	:
मत्याश्न	n = b	પ ? દ ત	
উন্মাদন	****	• •	4000
ুশা ষণ	2.144	47.75	4 ** .
ভা পন	p.«	***	u* •
'অন্তৰ	***	. w s	
\ ,			
	ষড়	ब्रम ।	
, ৰাছ -			. 3.50
व्यप्तन .	***	• ••••	
लवन -	*** ***	,	
কটু		• •••	****
France:		•	-

কৰায়

স্বাদু-মিষ্ট। কটু-তীত্ত-কাল। আহারীয় প্রত্যেক জব্যের আসাদ উপ্রি শিক্ত কোন না কোনটি রদের দহিত প্রকা।

·	য	ড্,ঋতু [
27/2	4004	,,,,,	***	>
र्माः स्त्रीतः स्त्रीतः स्त्रीतः स्त्रीतः	c # ##	+ D &		5
明祖	4 " "	440	***	«
.ধ্ নস্ত	4944		, ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	*
*ħ.3	**** 4	***	***	
143	4.00			
•				****

ঋতু ছারা বংগর বিভাগ।

40!

	5 .	• • •
E	p = 4,5	देनमाथ उ देक्छ।
दर्घ।	w 44 4	আনাড় ও আবণ।
শ্রহ	***	ভারত অপ্রিন।
ংহনন্ত	>+#*	কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ।
শীত	4191	পৌষ ও নাৰ।
বস্স্ত	* *	ফ্ৰেণ ও চৈত্ৰ।

याम।

विमाञ्च गर्छ।

	• • •		
कियाः।	***	4***	***
্কু হ্		***	
न गेक इन	• • • •		****
মিক্তাক্ত			
इ.स. ३	45.3		90,
(का:िस्व	****	****	,

যত্রিপু।

বান	· ·	****	. ,
ক্রোধ	,	/ € K I	,
লে\ভ	v* 1		***
নো ঙ্	•	,	
ञ् प	•••	••	in the gara
মাৎসর্যা	***	* *	ex

্মোহ-অজ্ঞান। মদ-মীত্ততা এবং মাৎদা প্রসিংহা, প্রশ্রীকাতরতা। মনুষ্য মাত্রেই এইছর প্রকার রিপুপট্রন্থ। ভল্লধ্যে প্রভ্যেতেকভেই কোনটির আধিকাত। ও ্রোনটির অংগভাবিলোকিত হইয়া থাকে।

কড়্দ**শ্ন।** দোহ

अमिछ	•••	***		*
नाम्य	,		•• •	\$
नांखा	****			· 3
াত প্তল	***	••		>
ীমাংশা		. ••	****	\$
े न्ट्रणातिक	••	****		>
_				

এই ছয় প্রবার প্রধান দর্শন শাস্ত্র আমা— দের দৈশে অতি প্রাচীন দাল হইতে প্রচলিত আছে।

ষ্ড্ বি	ध टेमनाः		
••••	****	****	*
****		er.	√ >
	••••		

7.41

	मर्	খ্যাসার।			ર્ચ
স্পিং	phá,	****		••	15 %
FTY	46>1	****		# N)	\$
५	3**1				13
क्स	4.50	***		****	\$
					*
	3 6			·	4
	টীন হিন্দু রা			_	
वक्रीय	মং হাপিত হ	हेंग्रा मक्ष	वीं भ	প্রভৃতির	আবি-
B N 1	দ ম্পাদন করির	াছিলেন	गटन	হ নাই,৻	য েহতু
4 5 M	গেরের প্রায় স	निक् रिन	हे गः	न ित्रन	কর ত
(बाध ड	ধ জলের অ	! विकिन	.च्ट्रात	ভাঁহার৷	सूरि-
हों द	নহা দাগর ে	নাতভ	दिश	1বভক্ত	করিয়া
न्यभार।	इन ।				Э
	;	দপ্তবি ।			· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
म्ब्रीह	44.			****	,
পত্রি	••	•••	- • •	****	>
শিক্ষির			,		>
्रीहा न्छ ।	····	****		•••	•
শুলহ	,,,,,	•••	***	**1	\$

₹.	नर्यापातः।					
'কবু	** **	****		/23	,	
र्शम छ	, ,	***	****		,	
4				•		

मधिता की वी।

. अध ार्ग हरे	•••	**1	** 3
या ज	. ,		
वाम		***	
'হত্ম %	.,	**	***
दि डी नः		**	· ·
कुशाहर्यः			**
न ्य ।	****	,	e 14.4

থা গোটারে শাত্রে উলিপিত সাতজন আন বিলিয়া উচ্চ ইট্যাছেন। রামারণ ও মহাভার পাঠে উপারি উচ্চ নহাত্বা সমুদ্ধের জীবনচরি। নাবিশোসভাত হওয়া ধাইতে পারে।

मध्रशी।

		•		
- ज्यंद	****	•		,
্িধ্য (কৰ্)	· ··			>
-পাচার্য	***	****		3
वस्रवामा				5
भ कृ जि	,	ü	****	3,
্ হৈয়াধন				5
<i>पुः</i> नानन			••	5

এক সমাধ র্থিই মহাবিংস্। আজু নিকে অন্যাধ সুজে ধনর স্পায়িত করেন।

(सह मना दस्ता अर्द्धानाम । १९११ वर्ष १९)

भभवीता।

77 N	••	***	•	4
2,342	****	****		;
-(म्यूनी	••		****	,
কুশ	. u a e			>
ब्र ीक	***	••	***	*

मध्डी।

প্রতিরত। :
কুলট' :
বংলী ... :

प्: ण नी	****	• •		*
বেশ্যা	•4•	•••		*
गुन्नी	• •	***		>
মতা বেশ্য।	1141		•	•

প্রথমে ক্রিল অপর কণকটি শব্দ প্রায় শভেদে ব্যবহার্য হুইছা ধালে।

পৃথিবীয় যাবভাগ ক্রা ক্রাভেই নিজং ভিনং খ্যাত ও চালে তেনে এই সাত প্রকারে বিভক্ত ছইয়াছে।

मणिया।

कगातांड।			***	>
খন্নদ;ভা	••	••••	,	>
छ। नमाण	***	***	•••	*
थङामांड!		****	v • • •	>
खग्राम (७)	, 41		***	٥
रक्षण ड		****		>

এত	ৰভা 'উ	পরি উক্ত স	थक् नरक (পত্ৰং
ভক্তি ক	(८३क ।			
÷		मपाइ!		
¥17	τ • •	**	*****	<i>r</i> ,
দে†ম	••	y . • v	••	
मक ल	1. /	*17		
<i>বু</i> ধ		*-	17.55	5
রহম্পতি		41.64	•**	,
ख क	.***	****		145
শ্বি		**		>

কি হাঙ্গালা, হিন্দী বা ইংরাজী গ্রায় নকল ভাষাতেই বার সকলের নাম, গ্রাহাদি হইছে: ভটৎপত্তি হইয়াছে।

मव बाझ्।

यामी >

	मंरचीमात्र ।			77	
ৰ ণা ত্ৰ		} 4 € € €		35	
557	****	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		, 3,	
কো য		+= +=	**		
र:के (दाका)	****	****	****	· Š	
ยูทั้	****	4 * * 4	·***	35	
(2)					

7.4

রাজ্য বিশেষে উল্লিখিত, মপ্ত অন্তেরই আবশুক হইয়া থাকে। যে রাজ্যে অফ বিশেন যের অসন্তাব হয়, তাহা সম্বিক প্রজিনশালী বলিয়া প্রিগণিত হয়না।

	व्यक्त	সু ≀	
হির্ণী (স্বর্ণ)	****	****	S * 5
রশভ (রৌপ্য)	4741	****	
কাংক্ত (কাঁদা)			· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
পীন্তল	****	*Cress	****
ভামু (ভাঁবা)	14-1		and the state of t

5 3	নং খ্যানার	i	
हो मा	* **	***	4.4.
বাঙ	**** '	****	• ••
্লৌহ (লোহা)	4145	****	

হিন্দু দেবতাদি অন্তথাতু গঠিত চইয়া পাকে বোগোদর বা বন্তবিদার পাঠে এই সকল ধাতুর গুণানিবিশেষ জানিতে পারা যায়,এইফানে এই পৃথিবীর নানা স্থানে নানা প্রকার ধাতু খনন হইতেছে। বস্ততঃ একের মহিত অপর ধাতুর যোগেও অনেক ধাতু উৎপন্ন হয়।

বিবাহাষ্টক।

ভা ক			****	4

ेटेम व	1 ***	• •••	****	3
षार्व	14.7%	4- 4-	**************************************	a.
প্রাকাপতা	****	****	w et war	5
্থাসুর -	****	****	= N = 1,	*,
ाष्ट्र	* ****	. ***	, ***	4,

পূর্বকালে এই ভারতবর্ষে উপরিউক্ত অন্ট গুৰার বিবাহ প্রচলিত ছিল, আহ্বান পূথাক বি-धान वाक्तिक व्य विवादश कन्यामान कहा इस छान েকে ত্রাহ্ম বিবাহ কছে। যজ্জাদি আরম্ভ করিয়া ुर्डाह्डिक स्य कन्। पान कड़ा इस जाहारक टेपव ^{নিবাহ} কহে। একটি গাভী অথবা গোমিথুন বঙ্কেব্ৰু নিকট লইয়া যে বিবাহে ভাঁহাকে কন্যা দান করা যায় ভাহাকে আর্থ বিবাহ বলাধায়। ৫ ভোমরা धरेष्ट्रा गार्रेष्ट्रा कर्म्य क्ब्नु,, बरेब्र्ट्स अवस्य याक्नु ^{বিলয়া} অনন্তর অর্জনা পূর্ব্বক যে কন্যা দান ম্প্র ৰ দান যে বিবাহের সম্পানক ভাছাকে প্রাঞ্জ भेका विवास वाला। कनाति शिजामिक समे श्रमान ^{ক্}রিয়া য়ে বিবাহ সম্পন হয় ভাহাকে আহঙ্ক বিবাহ কহে। ক্রা বরের **পর**ক্ষার অমুরাজে শালিকনামি ব্যাপারানত্তর যেবিবাহ হয় তাহারে

প্রথম বিবাহ করে। হরণ সময়ে যদি পিতৃত্ব প্রতিকুল হয় ওবে তাহাদিগকে হননাদি করি ক্রাঞ্কনাবি যে দান তাদৃশ দান যে বিবাহের শিপাদক ভাহাকে রাক্ষন বিবাহ বলা থাব নিদ্রাতে অভিভূত বা মদ্যপানে মন্ত্র যে কলা ভাহাকে হরণ পূর্বক অর্ণ্যে গমন কর্তঃ এ বিবাহ হয় ভাহাকে গৈশ্যে বিবাহ কণ্নে ধারতীয় বিবাহ অপেক্ষা পৈশ্যে বিবাহকে অন্

অফবসু ৷

,				
শ্বস্ত	***,	****	****	
ध्व	◆ ₹4 v		***	
ধর ধুব লোম		***	,.	ŧ
বিকু	«***	****	***	
प नित		·***	# • • • •	· ·
भागन	***		# * */* -	17.5
ब्राम	****		* ,4***	

ইংরাই মহবি বিশিষ্টের কাম্যের অপন্
হরে কৃত্ত ভাঁহার শাপজন্ম গঙ্গার গর্ত্তে জন্ম

এহণ করিবাই অমনি মানবদেহ পরিভাগে পূর্বে্ দিন্য লোকে শমন কিবেন। ভর্মধ্যে বিনি

গপভরণ লোকে শিন্দ দূলিত ছিলেন ভিনিই
কেবল ভাগ্ন নামে গন্ত জাবন নরলোকে থাকি
নি মুক্ত হ্যেন।

(সহাভারতের আদি পর্কার্থত শাস্ত্র রয়েন মহিছ গলার বিবাহ অধ্যায় ।)

	बन १	र ।		, ¥
इदि	***		***	>,
সোম (চন্দ্ৰ)		••		>
नक्रल	* ***	:***		`>
दूष		****	*****	1
রু হস্পতি	****	-	* co	
গু ক `	**** **	***		**
	শ্ব		, 3,	

45			मर्थाम् म्		
শ্বি	٠		,	,	* 4 *
রাছ		****	***	•	• • •
ক্তে		****	***	,	***
₹					

অধুনাতন জ্যোতির্বিদ্যা বিশারদ্দিশের
বিশ্বত হুর্যা গ্রাহ বলিয়া শিণা ক্রেন না। উপরি
উক্ত নবগ্রহ ভিন্ন শিরিজ পালান, জুনো এবং
ভেক্তা প্রভৃতি অনেকানেক কৃত গ্রহ আধুনিক
ইউরোপীয় জ্যোতির্বিৎণণ কর্ভৃক আবিদ্ধুত

হুইয়াছে।

"Not	न्	१४७ ।		
ধরত রি	***		• • • •	5
্ক্ষপুণক		●女母 @	****	5
অনরসিংহ	••••	****	***	
*13 5	4994	***	****	*
বেডাল ভট		**** ,		1
শাকপর	****	***	47 44	
क्रालिमाम	.h	6	3 ****	P. 45

🎍 এই মহালার, মহারাজ বিক্রাদিতেরু ল্ভা, রত্ন দদৃশই বিদাওিত কুরতঃ দংকৃত ভাষার বৈশেষ উন্নতিসাধনাক্রিয়া গিয়াছেন।

বর্**রুটি**

र्खनकन्।

আচার	• •	****	****	****	11.
বিনয়		****		*	٠ ٢
বিদ্যা		••••		****	•
श्रेडिश (গৌরব)	•/•,	(****	2
তীর্থদর্শন		****		****	Notice.
নিষ্ঠা (শ্ৰন্থ	[1	***			•
র ন্তি		****	***	****	, 5
ত পঃ্	~***	49 =4	****	****	10
मान	****	****	**** '	11	

যে সকল ব্রাক্তণেরা এই নবগুণে গুণাছিত ছিলেন ভাঁহারদিগকেই ভূপতি বল্লাল কুল শেণীকে সংস্থাপিত করিয়াগিয়াছেন।

দশাবতার।

he ni	***		****	
कूर्च	* F#8	** **	***	
Pate	u+41	₹.	⊕ b see	•
नविगःष्ट	. ***	:	***	ţ-
बाभन	e 1 0 0	u#MI	***	۶
बीगम भा	(পরস্তরাম)	****	****	·.
রাম	hern	****	****	, 4
कुग्र	4* •	****	,,,,	, , 5
বুজ	****	****	• • • • •	
क्रक	A- 84	***1		, >
*				

ভগবান নারায়ণ উপরি উক্ত পর্যায়ক্রনে ক্র ক্রহণ করিয়া এই ভারতবর্ষে যুগেংলীলা সম্পাদন ক্রিয়াগিয়াছেন, এইবুল পুরাণ্যি হিন্দু শাস্ত্রে , নিথিত আছে, তথাধ্যে কক্ষী, অবতারৰপে এই কণে আবিভাব হয়েন নাই। বিষ্ণুয়শা নামক ব্ৰাহ্মণের স্থাহ এই ভাবী অবতার জন্ম প্রহার করিবেন।

কল্কী পুরাণে লিখিত আছে।

দশ সণ্কার।

	4 4			
VIEWIN				\$
शू श्मदन्			****	·*`
দীমভো ন্তুন			. ,****	•
্জাত কৰ্ম		****		5
নিষ্কু মণ	***	4***	****	>
নামকরণ	g1 6 v	e P 4 4	****	>
অন্নপ্রাশন	****	****	.5	\$
চূড়াকরণ	****	****	** **	. 5
উপনয়ন	••••	***	***	\$
বিবাহ	4545	~ i.i.q.	***	*

मनापक। 有事等 4 ं देन क्ष' ङ M 48 म्णिपिक शाल। শৈতৃপতি (বন)

বৰুণ		***	****	, لا ن "
र्गकृष	****	****	****	\$
কুবের	•**•	****	47*4	* *
क्रेन	44	****	****	•
উৰ্দ্ধেত্ৰদা				, s. *
অধুসি অনন্তঃ		4 max	****	3



দশদিক পালের দশদিক বিভাগ।

দিকপাল	***	4.44	•
रे छ	****	d R pd	****

ब्राङ	4.0)		'শ্বি	
পিতৃপতি	(খ্যা		***	त किन	
নৈখা ত	,•			देनश्राक।	
বরুণ	***		****	পশ্চিম।	
স্কুৰ	••	** ****	****	বাৰু ৷	
কুবের		·· ••··	****	উত্তর।	
B #		• ••••	****	विमान्।	
<u> একা</u>	,	, ', 444	4	041	
અ નશઃ	***	•		, অধঃ।	
দশোপচার পূন্য :					
PITT			****	5	
	****	ot typic		> >	
অর্চ্য শাচননীয়	• • •	·	48		
অর্চ্য শাচননীয়	• • •		#### ####		
व्यर्ग	• • •	 त क् लरो	4811 4811 4811 4881	. .	
ক্ষর্য্য কাচমনীয় মধুপুক ্র কাচমন	• • •	 নজ্ <i>ল</i> ং]			
ক্ষর্য্য কাচমনীয় মধুপুক ্র কাচমন	 গভাবে স্না: 	নজ্ <i>ল</i> ং]		5 5 5	

দীপ टेनटवरर

দশোপঢ়ার পজা সামান্যতঃ না হইয়া বিদ **्युर** कोर्याञ्चरत्रारथ हरेशा शास्त्र। वञ्च यः मान भाइतिकः हरेत्वथ श्रीने नुष्टि। कण स्टल प्रत्या-প্রচার পূজা সামানা প্রায় প্রত্যহ হইরা থাকে।
দ্বা শন্তান।

7	- J. J.	-		
ेंदुर	••••		****	>
শেত্ৰজ্	****	***	***	•
দত্তক	m# 414	444		*
ক্লতিম	** **	****	****	*
গূরড়াৎপন্ন	****	~ **	4+++	>
অপবিদ্ধ	***	** * *	4*44	,
কানীন	****			15
मंदद्वाप	***	***	••••	**
ক্ৰীত	-+1	. 400		13
পৌনৰ্ডব	***	B194	(alagia	, \$

শ্বারশ্ব

নিবাহিভাত্রীরণরে সামীকর্ত্ক উৎপাদিতকে মু**ওরদ বচ্চে,খ্র**ীতে বিধানক্রমে অন্যদার **উৎপ্র**া-দিতকে ক্ষেত্রস। নাতা প্রিত্যু কর্তৃক দন্ত যে পুত্র म पढक। अकाषीय, शूर्खेर्शनांकांख क्लीन वान-ককে পুত্র করাকে ক্রিম করে, যাত্রপুর্ণ ভার্য্যাতে ! গোপনে স্বন্ধাতীয় জন বিশেষ কর্তৃক পুত্র উই পাদিত হয় এমত পুত্র গুঢ়োৎপন। মাতা পিতা কুৰ্ত্ব পরিত্যক্ত বানককে পুত্রৰূপে স্বীকার করা অপবিদ্ধ। বিবাহের পূর্বের কন্যার পিতৃ श्रह (४ भूळ इस म कानीन। गर्डयूक कनांत्र ৰিবাহ পরে, ঐ গর্জ্জাত পুত্রকে সংহাঢ় কছে। পিতা মাতার নিকটে অর্থধারা যাহাকে কেনা হয় দে ক্রীভ। বিবাহানন্তর পুনর্বার অন্যের ভার্যা হুওত: যে মন্তান জন্মে ভাহাকে পৌনর্ভব। মাডা পতা কর্ত্তক অকারণে ত্যক্ত কি মাতা পিতা

। সংখ্যাসার। ৪৪ বিহীন বালক আপনি অন্যের পুত্র হয় যে স্বয়ং দত্ত। একিণ কামাশক হইয়া শুদাতে যে পুত্ৰ ^জ উৎপাদন করেন ভাহাকে পারশব্ কংছ।

हाम्य याम।

रेस्माथ	****		•	6.P.e.S	\$.
देखा र् छ	***	•		****	5
শ্বাচ	**			***	>
ভাবণ	****		****		5
ঠাঁত	,,,,		***	» t #*	5
আশিন	3***			***	>
কার্ত্তিক	***		, • • •	-551	` *
অগ্ৰহায়ণ	****			****	3
পৌষ	* *****		***	4987	>
মাঘ	****			****	>
কান্ত্ ণ	**		****	. * * *	*
टैठक 🐣	****	****	24,50	,	/ `\$ `

मापन ताना।

ে ঘৰ	**,-	****	****	S
इब	***	***	4700	>
নিথুন	***	*/**	****	٧,
কৰ্ক ট	****		-22	*>
मिश्ङ्	•••.	****	••••	•
कन्तुः।			**** *	٠
তুলা `	****	***	****	*,
ব্লশ্চিক (বিছা)	****	****	3466	٠,
ধন্ম	****	1000	***	•
মকর	••••	****	,	ړ.
কুন্ত মীন	****	gr 94	****	٠,
हो न	••••	****	· · · ·	٠.

32

ক্ষোতির্বিৎ হিন্দু পণ্ডিতদিরের মতে ক্র্মা বংশরের মধ্যে মেষ, রুষ প্রভৃতি এই ষাদশ রাশিচক এক বার পরিভ্রমণ করেন। ভ্রমধ্যে বৈশাধে মেষে, জ্যৈষে বুষে, সামাচ্ছে

ें थे न	এবং	এইবপে	टेहदा	भीन	রাশিতে	37 -
े कि	ক রেন্	1	•			

	প্রস্থা	তিথি।		
গতিপাৰ	••••		****	•
र श्रीया	1444	****	****	•
इ जीता		••••	••••	>
s কৃথী	••	~		>
" भारती	***	,	****	>
क्षेत्र		••••		•
ম গুমী	****	****	.***	5
খ ঠ নী	••••	••••	c*#*	5
नगरी	** ;*	****		3
Sale and		****	****	>
একাদশী	****	** 74	***	* >
वानभी	•••	***	***	>
दरहामभी		****	c***	>
ए कु र्फा भ ी	••••	****	• .	. 3
পূৰ্বিমা বা অ	।নাবস্য	••••		* . *
				78

ি বিতীয় ভাগ চাকপাঠ, পাঠে প্রতিপদ দ্বি দীয়া প্রভৃতি ভিন্মি দম্বছর কারণ ও চন্দ্রকলার ক্রম রুদ্ধির বিধর বিশেব অবগত হওয়া যাই-তে পাঠবেঁ।

তে প্রের। যোত্ৰ হাতা। खनवा ही পর্রপারিণী প্রক্রপত্রী देखेरमव शङ्गी ভক্যধান্ত্ৰী পিতার পত্নী कंगा मद्दापदा जिंगी ্<u>পূত্ত</u> পত্নী শতা (শাওগী)… **শাতা**মহী পিতানহী ্ৰাত্বধু নাত্ত্বদা (নাদী) --

পিতৃ স্বশ (পিগী) ····		****	>
नाङ्गानी (नामी) ···	1444	ø ,	\$.

উপরি উক্ত যোড়শ পুজনীয়াদিগতে মা-ভূবং মান্য এবং ভক্তি প্রদর্শন করা মন্ত্রা মাত্রেরই উচিত, এই উদ্দেশেই ইঁহারা মাতৃ-পদ বাচ্যে কথিত হুইয়াছেন।

যোডশদান।

ভূমি	r 4 ≈ 1	****		*
च∱प्रस	••••	u 4 • F	,	*
ज् न	***	••		٥
ন ্তর	****	***	****	*
मीश	***	****		3
শন্ন	****	•••	****	3
তামুল	****		,.,.	5
ছত্ত	****	****		3
स च	****			5
मंग्र	••••	****	44.	' 5

্বিশ্পক পুৰুৱাচননীয়

1	महः अपृति मि ।			
গ্ৰীয় জল	. ••••	* ****	<i>6</i> 11	,
(A	•••	****	* **	; *y
গভিব	15**	****	• •	>
গন্ধ			• • •	\$
শু জ্ব	••	***		*
ধূপ		-	***	\$
युष सोध		****		Š
रेस इच व	***		****	*
दामन् न		•	***	>

```

ত্তিবিদ্যর প্রভৃতি ব্রুল্বন্ধারেই থো-ড্লু উপচারে পুজা কার্যা মধ্যম চইয়া থাকে। ফলতঃ অনাম্য কর্ম কাজেগেলকে গোড়ল উপ্র চারে পুজা হইলেও অধুমাত হানি নাই। অনেক ভানে নিভা নিভাই উপায়িউজ বিধানে পুজা সমাধা হইয়া থাকে।

वर्छ। मन श्रुद्राल।

ৰাখ ---- --- --- --- ---

সংখ্যাসার। **देवम**्य ٩, **ভাগবৰ** मानुकी ग व्याक्टाला কাহেয়ৰ **फ**रिया **बका**देवनर्ड टेन अ 4915 1 > বামন 3 5 3

এই দকল পুরংন নথে; অনেক উপপুরার্থি নিবিউ আছে: পুরানপাঠে স্থাটির বিরণ রাজ্য নিবেন বংশদিনরণ নম্বত্র সম্বর্থীণ ঘটনাবলী নবং বিশেষ্থ বংশের বিশেষ্থ চরিত্র জালা যাই।

মান্ত্ৰিচক (বিলেছণ) শক্ষা

সংখ্যানাসত শাল গুণ্ প্রনার-গণখ্যা বেশিকা
প্রং সংখ্যান পূর্ণ থোঁ ক বা বাহালা ভাষা
সংখ্যা বেশেক শক ছাল প্রক রে বাবজ্জ-সাধুতান
বাম প্রচলিত এক প্রানার ও সামান্তির বাধকা
ভাষা প্রকারণ ভাষাপ্র প্রক্ষিত প্রকারই নিম্নে
নিথিত হইল, ধর্ণ—

मः थादाइक।		25	ণ্ৰ চব	व्यक्ति ।	•
্ৰস্ক	2177				
	ৰ ক	34	अथ्य:	প্রথম	,
	্ৰি	২্ শ্ল	**	ছিভীয়	1
	<u>ত্</u> ৰি	ওর	>,	ভূঙীয়	
	চজুর্	धर्य		টকুৰ্ব	

ऋश्य	ावाहर !	श ृर	9715% × -
	R (%)		
. Marke	পুরু	en with	প্রভাগ
™. 9 2.,	गुहे (४४)	* 5 , 5	য ্ ষ্ট
, q , ,	मंद्र	97 ,,	সপ্তৰ
lu-	જા <i>દે</i> ક	b4 50	द्विव
79	- - •	n -1	া বৃহ
5.	स्≉ि	وو پالامد	स अप
33	escribe.	1. S. 11	321.0
58	च्यानमा .	26 26 11	好 有的 ⁴⁸ .
W	ETRIP-	\$0%	अरहोतन
>8	हरू के जा इ.स.	384 m	じっちゃ
54	श् रुप्तम	50 % m	अं रंखत भ
• •	্ষণক্ত	૧૪ક ,,	ষে ভেশ:
3 %	স্ ণ্ড দি শ	12 to 18 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19 19	मुशु हुन
>=	W STRA	76×1 1	অন্টোৰ ল
	केंग्रीतः संबि	39×1	উন্বিংশ
3.4	বিংশ ত	₹ 0 4 ₹ 93	বিংশ
**	একবিংশক্তি	E/3/41	একবিংশ
~ ?			

সংখ্যাবচিক। পূরণবাচাক শকা।
আঞ্চলান।
২২ দাবিংশভি ২২শাল্য সন্ধ্রিংশ ।
২৬ তথ্যাবশ্লভি ২৬শা, তথাবিংশ

২৪ চাতুনিংশাভি ২৪৭ , চারুবিংশ ৩৫ প্রচারংশাভি ২৫শ , প্রচারিংশ

€ ख, † मि 1

উন্ধিংশতি ভাগতে ভ্ৰণিট পূরণ বাচক শকা সকল প্ৰাভভাগ সংগ্ৰাসাত্ৰ বেংধক শক্ষে (ভগ) প্ৰাভাগেৰ বেংগেও নিজাল গ্ৰায় বথা,— উন্ধিংশতিভগ, বিংশতিভগ এক্বিংশভিভস ভ্ৰাশিভভগ ইভাবি।

में भावाहक।

遊戲			a (A
**			धर्ष्तिश्ला डि
२५		••	मल्डरिः मजि
35	••	•	অন্টারি-শ্ভি
२%	••	• •	ভীন ্তি শব
۷.		****	ত্রিং শৎ

भः था भाव ।

मः स्रावाहक।

可称			स्र ।
45	·•••		এক ত্রি•্শং
wt -	, iå.		の本の記す
\$ 3	,,		ख्या खर्मद
98	,,,,	•••	চভূত্তিংশং
30	y + 400		State Links
~	*#*	•	वर्षे जिल्लाह
49	11.41		科的 了在代表表
196	*1**	•	क्षाचे दिश्वर
45	****	w -	के. इंडी विश्मा
\$.	•••		हर् [हर् सर
87.7	**	•••	এবচ গ্রারিংশৎ
Be	uje kaj		ष वा किन्योतिः भर
8.			ত্রয়ো বা কেতহ'রি শং
88	••••	1 64	छङ्का इ । दिश्म्
€¢.			পঞ্চয়।রিংশৎ
**	>+#*	•••	ষট্চ হা রিংশং
.in		****	সম্ভচ্ছারিংশৎ

मश्याग्वाहक।

			TIN !
b ~	P.		অন্টা বা অইচহারিংশং 🥇
72	***		उ नशक्कां बर
۰	••		अश्रामट
>			এক প্রধান্ত
٠۴.	• • •		इ। वा विश्वशां मद
4	***	**	হয়ে! বা ত্রিপঞ্চাশৎ
tg	,	**,	D 3 : Marine
tæ	** *	•	25 解 起始本城市
ido	•••		पकेश सम्
:4	•••		স্থাপ ক্ৰাশং
ibr	* **	•	षक्षी वा असेमकामक
রে	****	**	उ नहरू
j >	****	***	व ि
£*3		****	क्रमाँ छ
Þξ	. +5-	•	ष्ठा ता विपक्ति
9 7		.,,,	ब्राष्ट्रा था जियकि
**	****	t or	চ কু:য ি

मर्था गान्।

मः था । गाउकः

MATE AND A			स्था।
CAS.		K+4	शक्षास्त्र
1040	ani r 1		ষ্ট্ৰ কি
. 909	. > - >		নপৃহ্যি
۱			था छै। या व्यक्ति कि
44	****		ট্ৰস ঞ্জি
4.	4 > 4	•••	সপ্ত িত
35	****	•••	वकमर्थि ।
92	1090	***	দ্বিপপ্ত তি
4.9	4*9*	****	न्वतश्चिष्ठ
% 48	** **		र दूरमञ्जू
4 3			्, शः शः प्र [†] क
•	WP	***	महेमल्डि
41	****	***	अक्षाल (ड
95	****	•••	इ.के व धरेमखि
46			के निर्माक्त
3,7°	***	****	অশ্ভ
	·	61.4	, একাশীতি

भःशाबाहक।

128			নাৰ ৷
ર	*1 **		দ্যশীতি
ب ،	184	•••	grants
-8	4.6	**	চভু রশীতি
-3	**	•	প গুণশীতি
*19	••	**	যড় শী তি
bå	***	***	মপ্ত†শী শ্ভ
سوس	•	•	অফ'শীতি
53	• •		উন্নৰ্ভ
৯০	***	• •	नरि
2:	****	••	এক্ ন ৰ্ভি
\$6	***	4.4.1	ষা বাগিনৰ্ভি
ે દ્ર	••		ত্ৰয়ো বা ত্ৰিনবভি
: 3	***	4131	চাতুনবিভি
23	***	****	শঞ্জনবতি
ಶಿಶ	***	••	यह विक
29	****		দপ্তনব ্তি
ット	**** 19 *** *** 19	****	অ্টা বা অউনব্ভি

2.69

Ft:

मश्यागिक्त ।

অঙ্ক	•		∓ ল ∤
22		/ d # c	जनभूत कि
200	†	 .	. *13

সাম্ভেতিক শব্দ ব্যবহার।

স্থানবিশেষে কতক গুলিন শক্ত সংক্ষাত 🐠 হার্য্য হয়, যথা-かまる きなぐ সাক্ষেতিক শ্ৰু। 17.186 আ'ং इंग्र **इ**९ ₹ द्रां ा ₹° উত্তর উং বিদয়ভ কিং কেম্পানি **Caite** ··· কীব**লিক 3**

💮 👵 🥶 🔐 🧸 होनान

... ধ্রন্তার ৎ

मः थामात्र ।

দাক্ষেতিব	ह अवह ।			প্রকৃত শব।
्रि ड ्	• ••	****	,040	জিমা
s te	**:*	gon.	***	ভারিখ
R.e.	****	. ***		দ ৰণ
THE '	****	****		क्ति शं
ন ং	2***	4 Q P	••••	নম্বর
143	4 6 01	2001	•,	निद्यमन
শৃং	••••	• • •	****	পর গণা
शु रा १	te			পুনশ্চ
পুং		****	4000	পুংলিক
Mte	****	.		পারসী
ব্যঃ	****	26.4.0		প্রশ
3 2	****	****	****	বকলম
विং	4-25	* ;	40,00	বিম জিছ ম
বিং		***	,	বিয়ারিং
হা ং		gra 6.4	1000	वा त्रला
ভাং	· db gdoo	,	4 4 * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	ভাণারী
মং	(**)	,	. * * *	মব লগ
মাং		# * 0 1 (maximum)	<i>e</i> ::	মার কুড়

गाङ्कि	क् अस्।			প্ৰকৃত খব ৷
মেং	****	1201	***	মেন্টব্ৰ
(मार	****	****	•••	<u>শোকাম</u>
মোং	••••	***	4+44	মোভাবে ক
जीर:	****	L# 14	¢~ 6 €	ত্ৰীনিক
* সা ং	11 10	9 * * *	****	শ কিন
म ः	44	£	म १३	মূত বা সংবাদ
हि: -	***	****	****	इन्ही
हिः	****	** **	****	इिंगा व

